मैथिली

स्नातक (प्रतिष्ठा)-II
पत्र - चतुर्थ
चतुर्थ-व्याख्यान

डा॰ राज कुमार राय
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
कि॰ सि॰ ज॰ महाविद्यालय, रामनगर

मैथिली धार्मिक नाटक :- कीर्तनिआ 'नाच'

मिथिला क्षेत्रमे धार्मिक नाटकक रूपमे कीर्तनिआ नाच प्रसिद्ध छल। मिथिलाक समस्त कीर्तनिआ के हम धार्मिक नाटक मानैत छी जाहिमे प्रायः सबहिक आधार पौराणिक अछि। कीर्तनिआ "नाच" छल की "नाटक" अथवा "संगीतात्मक नाटक" छल; की मैथिली नाटक- एहि सभ शंका जे किछु हो परन्च हमरा जनैत निर्विवाद रूपें ओ सभ मध्यकालीन धार्मिक (पौराणिक) मैथिली नाटक छल। जँ ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम (प्रहसन) तथा विद्यापतिक गोरक्ष-विजय मे मैथिली नाटकक संकेत प्राप्त होइछ तँ पूर्ण रूपें धार्मिक नाटकक रूप मे आबि आइछ उमापति उपाध्याय क 'पारिजातहरण' जकर कथानक

पौराणिक अछि। तत्पश्चात गोविन्द दासक नल-चरित, सरस्वतीक आनन्द विजय, देवानन्दक - उषा- हरण, रमापति उपाध्यायक रुक्मिणी हरण, लाल कविक - गौरी- स्वंयवर, नन्दी पतिक कृष्ण- केलि-माला नाटक, गोकुलानन्दक मानचरित्र - नाटक, शिवदत्तक गौरी- परिणय, कर्ण जयानन्दक रुकुमाङ्गद नाटक, श्री कृष्ण कान्त गणकक - श्रीकृष्ण - जन्म रहस्य, रत्न पाणिक उषा हरण, हर्षनाथक माधवानन्द एवं उषा हरण, विश्वनाथक रामेश्वर चरित, चन्द्रेश्वर चन्दा झा क अहिल्या - चरित्र एवं स्व० राज पण्डित बलदेव मिश्रक राज-राजेश्वरी तथा रामेशोदय नाटक समस्त मिथिलाक कीर्तनिया- परम्पराक मैथिली धार्मिक नाटक सभ थिक।

एकर आगि छथि आधुनिक मैथिली नाटकक जन्म दाता पण्डित जीवन झा मानल जाइत अछि तथा हिनक 'सुंदर संयोग' के प्रथम आधुनिक मैथिली नाटक मानल जाइछ। आधुनिक मैथिली नाटक सभ पर विशेषतः मुन्शी रघुनन्दन दास, प० आनन्द झा, तथा स्व० प्रोफेसर ईशनाथ झाक नाटक सभ पर

पारसी नाटक कम्पनी स्वाभाविक प्रभाव देखैत छी। एहर यद्यपि अधिकांश रूपेँ मौलिक सामाजिक नाटक, प्रहसन, एकांकी, अनुदित नाटक, रेडियो-रूपक आदि मैथिली मे प्रचुरतया देखैत छी तथापि मैथिली मे धार्मिक नाटकक रचना सेहो समय-समय पर होयत आयल अछि तथा एकराहि क्रम-स्वरूप लाल दासक सावित्री सत्यवान, शशिनाथ झाक कविय धर्म-परीक्षा, आनन्द झाक सीता-स्वयंवर, प्रोफेसर ईशनाथ झाक 'उगना', रामकृष्ण झा 'किसुन' क उगना रे मोर कतए गेला तथा डा० घनश्याम ~~मिश्र~~ झाक धरह गोविन्दक पएर (भगवती भक्त) आदि के पूर्ण रूपेँ आधुनिक धार्मिक मैथिली नाटकक श्रेणी मे राखल जाए सकैछ कारण जे एकर समग्र आधार-पौराणिक एवं उद्देश्य तँ पूर्ण रूप सँ धार्मिक अछि। इएह अछि मैथिली धार्मिक नाटकक संक्षिप्त रूपरेखा।

स्रोत :- मैथिली साहित्यक भूमिका - डा० परमेश्वर मिश्र